सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो [illegible]ल्लत गौसे ज़माँ वलिय्ये कामिल हुजूर मुनाज़िरे आज़म अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी हकीम मुफ़्ती

शाह सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी मुतर्जिम व मुफस्सिर व मुहद्दिस मुरादाबादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हु की हयाते मुबारका पर अज़ीमुश्शान किताब

हयाते मुजद्दिद मुरादाबादी

रज़ियल्लाहो तआला अन्हु

मुरत्तबह

शेरे अहले सुन्नत पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती अल्हाज

सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी सज्जादानशीं अस्ताना ए आलिया क़दीरिया हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी.

नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़ यूपी. मो0: 09456885786

Made with Visual Paradigm
For non-commercial use

सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मि...
हुजूर मुनाजिरे आजम की बअज तसानीफ़

ऐ ईमान वालो
इन्तेखाबे शरीअत
अल्लाह और उसका रसूल
अकसामे अहादीस
अन्गूठे चूमना
अज़ाने अकामत के दरमियान तसवीब
अनवारे सलासा
आदाबे मजलिसे फ़ैजाने कदीरी
आदाबे मजलिसे फ़ैजाने कदीरी 2
अहादीसे तय्येबा
इस्लाम में ईसाले सवाब
अज़ाने सानी का फिक्ही हुक्म
आंखों देखा हाल कछौछवी
आंखों देखा हाले संभली
बसीरतुल ईमान
बेसाते नबवी
बिदअत की हकीकत
बसीरतुल इरफ़ान
पैगम्बरे इस्लाम
तफ़सीरे कदीरी
तशरीहाते कदीरी
ताजिये शरीफ़ का शर्ई हुक्म
तकबीर में बैठना
तारीखे ईदे कुरबाँ
तफ़सीली खत अव्वल
तफ़सीली खत दोम
तफ़सीली खत सोम
सुबूते ईसाले सवाब
हाशिया करीमा
हाशिया गुलज़ारे दबिस्तां

हयाते हुज़ूर मदारुल आलमीन
हयाते हुज़ूर अल्ला हू मियाँ
हयाते हुज़ूर ताजुल औलिया
देवबन्दी खयालाते बातिला
दलाइले इन्तेखाब
देहलवी और बरेलवी
सैफ़े लतीफ़ी
अल्लाहू मियाँ नम्बर
शहीदे आज़म
शमाइले इन्तेखाब 1
शमाइले इन्तेखाब 2
शमाइले इन्तेखाब 3
शमाइले इन्तेखाब 4
शमाइले इन्तेखाब 5
शमाइले इन्तेखाब 6
शमाइले इन्तेखाब 7
रेडियाई तकरीरें
साबरी बुलबुल नम्बर
फ़जाइले तौहीद व रिसालत
फ़ज़ाइले तहारत व नमाज़
फ़ज़ाइले दुआ
फ़ज़ाइले हज
फ़ज़ाइले ज़ियारते मदीना शरीफ़
फ़ज़ाइले शाबान
फ़ज़ाइले दरूद व सलाम
फ़ज़ाइले रमज़ान शरीफ़
फ़ज़ाइले कुरआने करीम
फ़ज़ाइले अहादीसे मुबारका
फ़ज़ाइले ज़ौजैन
फ़ज़ाइले वालेदैन

फ़ज़ाइले औलाद
फ़ज़ाइल व मसाइल रमज़ान शरीफ़
फ़तावा ए कदीरिया
कदीरी खुतब ए इलमी
कुरआनी तराजिम का मुकाबला
कब्र पर आज़ान
कब्र को सजदा या बोसा
कदीरी अदब 1 ता 5
कैलेन्डर 1990ता2005
मदारी शरीफ़
मनाज़िले इन्तेखाब
मुनाज़रा ए लनढोरा
मुनाज़रा ए कलकत्ता
मोमिन व मुनाफ़िक का मुकाबला
मीज़ाइले इन्तेखाब
मुनाज़रा ए इन्दोली
नमाज़े कदीरी कलां
मुनाज़रा ए कचनार
मखज़ने असरारे कदीरी
मेयारे शराफ़त व रज़ालत
नमाज़े कदीरी खुर्द
नक्शे कदीरी मुरादाबादी
नक्शे कदीरी इन्दौरी
नक्शे कदीरी सूरती
नक्शे कदीरी पीलीभीती
नमाज के नाम पर धोका
निगारशाते कदीरी
वहाबी धर्म में झूट का मकाम
या नबी
या हबीब
या रसूल

Scanned with CamScanner

786

सय्यदना हुजूर अमीरे अहले सुन्नत

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ग़ौसे ज़माँ वलिय्ये कामिल

मुनाज़िरे आज़म अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी हकीम मुफ़्ती शाह

सय्यद मोहम्मद इन्तेखाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी

मुतर्जिम व मुफ़स्सिर वं मुहद्दिस मुरादाबादी

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हयाते मुबारका पर

अज़ीमुश्शान किताब

हयाते मुजद्दिद मुरादाबादी

अज़ क़लम

शेरे अहले सुन्नत पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा

हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती अल्हाज

सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी. सज्जादानशीं अस्ताना ए

आलिया क़दीरिया हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी,

मोहल्ला नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़ यूपी भारत

नाशिर

गदा ए हुजूर मुनाज़िरे आज़म मुजद्दिद मुरादाबादी

मोहम्मद तक़ी क़दीरी

O ब्लाक सुन्दर नगरी देहली

Made with Visual Paradigm For non-commercial use

Scanned with CamScanner

धरती के सीने पर उलमा की कमी नहीं है, जो पैदा होते रहे हैं और होते रहेंगे, लेकिन आज का ज़माना ऐसा है कि कोई भी दाढ़ी रखकर टोपी पहन कर अपने आप को मौलाना कहलाने लगता है, लेकिन जिनकी ज़िन्दगी उस इल्म पर खरी उतरती हो हक़ीक़त में वह ही सच्चे उलमा होते हैं, जो कि कम नज़र आते हैं।

सरज़मीन मुरादाबाद शरीफ़ भी इस से अछूती नहीं रही है। यहाँ भी उलामा का लेबादा औढ़े बहुत सारे लोग नज़र आते हैं, मगर ऐसे उलामा व माशाएख़ भी चमकते हुए नज़र आते हैं जिन्होंने मुल्क व बैरून मुल्क में अपनी रूहानी सलाहियतों व कमालात का लोहा मनवाया है।

जब तेरहवीं सदी निस्फ़ आख़िर से अन्त की जानिब रवाँ दवाँ थी और सच्चाई का ऐसा अलम बरदार दूर दूर तक नज़र नहीं आता था जो सच्ची बात कहने का हौसला रखता हो, जो सुन्नियत की पासबानी की कसोटी पर खरा उतरता हो, तब अहले इल्म व दानिश को यह फ़िक्र ज़रूर हुई कि अब हक़ बात बिना झिझक कौन कहेगा? अब बातिल की आँखों में आँखों में डालकर उनको उनकी औक़ात कौन दिखाएगा? कौन सुन्नियत का पासबाँ होगा? अब किसके दम से मुरादाबाद शरीफ़ इल्म का मरकज़ बना रहेगा? अब कौन सच्चाई का अलमबरदार होगा? अब किसके दम सुन्नी सीना तान कर चलेंगे? अब कौन सुन्नियों की ढाल बनेगा? अब कौन होगा जिसे रब तआला इल्मो अमल का अफ़ताब व महताब बनने की सआदत अता फ़रमाएगा।

यह बेचैनी तब और बढ़ गई जब अहले सुन्नत को खुले वहाबियों से ज़्यादा खुद में मौजूद छुपे वहाबियों ने ज़्यादा नुकसान पहुँचाया। कोई कह रहा था कि ख़ानकाहे सययदना हुज़ूर मदारूल आलामीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अता ताज़िया शरीफ़ नाजायज़ है और उसको देखकर मुँह फेर लो,

Scanned with CamScanner

कोई कह रहा था कि सययदना हुजूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सुन्नत सिमा (क़व्वाली) नाजायज़ है, कोई कह रहा था कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ में सययदना हुजूर शहीदे आज़म इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का ज़िक्र करना मना है, कोई कह रहा था कि फ़ज्र के बाद सलातो सलाम नहीं पढ़ना चाहिये, कोई कह रहा था कि मज़ार शरीफ़ को हाथ नहीं लगाना चाहिये बल्कि चार हाथ फ़ासले पर खड़े होकर फ़ातेहा पढ़ना चाहिये, कोई नव्वे फ़ीसद मुसलमानों को रज़ील क़रार देने की नापाक कोशिश कर रहा था, मसलक हनफ़ी को पसे पुश्त डाल कर एक नए पाँचवें मसलक को चलाने की मज़मूम कोशिश की जा रही थी।

मुनाफ़क़तज़दा ऐसे सिसकते माहौल में ईमान वालों के ईमान को जिला देने के लिये और अहले बातिल को उनके ख़ौफ़नाक अंजाम तक पहुँचाने के लिये रब्बे क़दीर जल्ला मजदुहू ने हज़रत सययद मुहम्मद अलताफ़ हुसैन क़दीरी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान और मोहतरमा सय्यदा सुग़रा बैगम क़दीरी को एक चाँद से बेटे नावाज़ा जो कि 12 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1368 हिजरी मुताबिक़ 13 जनवरी सन 1949 बरोज़ बुध ऐन उस वक़्त दुनिया में तशरीफ़ लाए जबकि आपके वालिद हज़रत सय्यद मुहम्मद अलताफ़ हुसैन क़दीरी मोहल्ले की मस्जिद में अज़ाने ज़ोहर पुकार रहे थे और आपकी जुबान पर शहादते सानिया में सय्यदना आलाहज़रत प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुबारक नाम था, बस सययदना आला हज़रत प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नामे नामी इस्मे ग्रामी सुनते हुवे सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मुहद्दिसे अज़ीम, मुफ़स्सिरे फ़हीम, मुतर्जिमे क़रआने करीम, वलीये कामिल ग़ौसे ज़माँ शैखुल अरबे वलअजम, तारीख़ी शायरे दरबारे रिसालत हुजूर मुनाज़रे आज़म अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती सययद

Scanned with CamScanner

मुहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस दुनिया में क़दम रखा।

19 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1369 हिजरी मुताबिक़ 12 जनवरी 1950 को दो सुर्ख़ बकरों पर अक़ीक़ा ए मसनूना हुआ।

17 शव्वालुल मुकर्रम 1370 हिजरी मुताबिक़ 22 जुलाई सन 1952 बरोज़ इतवार रस्मे सुन्नत अदा की गई।

26 रजब1372 हिजरी मुताबिक 1अप्रेल सन 1953 को नई बस्ती स्कूल मुरादाबाद शरीफ़ में दाख़िला लिया। इसी दौरान मोहल्ले की मस्जिद के इमाम मौलवी मुहम्मद हुसैन बंगाली से नाज़रा कुरआने करीम पढ़ा।

17 मुहर्रम 1377 हिजरी को कुरआने करीम हिफ़्ज़ करने की इब्तिदा फ़रमाई और मदरसा शाही मे 4 पारे हिफ़्ज़ फ़रमाए, बाद में मदरसा फ़लाहे दारैन में हिफ़्ज़ किया और इख़ततामे हिफ़्ज़े 1461 हिजरी को मदरसा इमदादिया मुरादाबाद शरीफ़ में फ़रमाया और वहीं हिफ़्ज़ की दस्तारबंदी हुई। हिफ़्ज़ के दौरान आपके साथियों में जो सबसे हमदर्द और क़रीबी साथी रहे उनमें मोहसिने अहले सुन्नत जनाब अल्हाज हाफ़िज़ मुहम्मद मुस्लिम साहब अशरफ़ी एक्सपोर्टर सालार ओवरसीज़ का नाम सरे फ़हरिस्त है। इसी दौरान आपने अखाड़े में उस्ताद नबी पहलवान क़दीरी मरहूम की देखरेख में कुश्ती शुरू फ़रमाई। साथ ही साथ आपने लाठी चलाना, तलवार चलाना और बंदूक़ चलाने में भी आपने महारत हासिल की और इन में आपको इतनी महारत हासिल थी जिसका नमूना कई बार देखने को मिला। मिसाल के तौर पर सन 2000 में जब आप महाराष्ट्र के मनमाड़ स्टेशन से हैदराबाद आँध्रा प्रदेश के लिये काचीगौड़ा एक्सप्रेस से रवाना हुए, तो अचानक तक़रीबन 25 यज़ीदयों ने, जो पहले से घात लगाए बैठे थे, आप पर जानलेवा हमला कर दिया और अपने आबाओ अजदाद इब्ने ज़ियाद व शिमर की याद ताज़ा की, लेकिन इस हुसैनी लाल ने

Scanned with CamScanner

भी अपने जद्दे करीम सय्यदना इमामे आलीमक़ाम शहीदे आज़म हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शुजाअत की याद ताज़ा फ़रमा दी, अकेले ही उन 25 से ज़्यादा यज़ीदयों पर भारी पड़ गए और उन सभी को दिन में तारे दिखा दिये। आपके फ़न का ऐसा नमूना देखकर वो यज़ीदी भागते नज़र आए।

23 अकतूबर 1961 बरोज़ जुमेरात को ख़त्मे हिफ़्ज़े कुरआने करीम की तक़रीब मुनाक़िद हुई, जिसमें वआज़ो मिलाद शरीफ़ और ज़ियाफ़त का अहतमाम हुआ।

14 जमादिउल उख़रा 1371 हिजरी मुताबिक़ 23 नवम्बर सन 1961 बरोज़ जुमेरात को सय्यदना ताजुल औलिया कुत्बे ज़माँ हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मुहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ पीलीभीती रज़िल्लाहो तआला अन्हो के दस्ते हक़ परस्त पर शर्फ़े बैअत हासिल फ़रमाया। आपके बैअत होने का वाक़ेआ भी ख़ुद में एक अज़ीम करामत लिये हुए है। चुनाँचे एक रात आपने ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग सियाह लिबास में एक छप्पर वाले मकान में अनार के पेड़ के नीचे रोनक़ अफ़रोज़ हैं और मेरे सर पर हाथ रखकर दुआ से नवाज़ रहे हैं, चुनाँचे आपने यह वाक़ेआ मोहल्ला नई बस्ती ही में रहने वाले जनाब सूफ़ी सरदार अहमद क़दीरी से बयान किया, उन्होंने फ़रमाया कि जो शक्लो सूरत आप बता रहे हैं वह तो सययदना ताजुल औलिया कुत्बे ज़माँ हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सययद मुहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की है और वह आजकल रामपुर तशरीफ़ फ़रमा हैं। चुनाँचेह जनाब सूफ़ी सरदार अहमद क़दीरी आपको साथ लेकर रामपुर हाज़िर हुए। उस वक़्त सरकार ताजुल औलिया रज़ियल्लाह तआला अन्हो मोहल्ला बाजोड़ी टोला में अपने मुरीद सूफ़ी अब्दुल क़दीर ख़ाँ क़दीरी के मकान पर तशरीफ़ फ़रमा थे। जैसे ही हुज़ूर अमीर अहले सुन्नत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उस मकान में दाख़िल हुए तो देखकर

Scanned with CamScanner